REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

मिथिलांचल में पर्यटन की आधारभूत संरचनाएँः वर्तमान स्थिति एवं समस्याऐं

राजेश कुमार
बी० कॉम०, एम० कॉम०,
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वद्यिालय, दरभंगा.

भूमिका :

पर्यटन उद्योग एक पूर्ण उद्योग के रूप में विकसित होता जा रहा है। मूलतः यह सेवा का उद्योग है, क्योंकि यह केवल उत्पाद को हि नहीं उपलब्ध कराता है अपितु यह अनेकों प्रकार की सेवा विभिन्न प्रकार के लोगों को उपलब्ध कराता है। मिथिलांचल के दरभंगा प्रमंडल के क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाऐं मौजूद है। इस उद्योग के फलने–फूलने से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सकेगा।

मिथिलांचल के पर्यटन का वर्तमान स्वरूप में देर–सवेर परिवर्तन होना तय है। इसके सुनहरे भविष्य की कल्पना की जा सकती है, जिससे स्थानीय निवासियों की आय में वृद्धि हो सकेगी, जीवन स्तर में सुधार आयेगा और आर्थिक विषमता दूर होगी। जन जागरूकता, मीडिया जागरूकता की आवश्यकता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार की महती भूमिका भी इस दिशा में स्वागत योग्य है, जो मिथिला में पर्यटन विकास को नया आयाम दे सकेगा।

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो फुरसतों के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से पर्यटकों के द्वारा की जाती है। पर्यटन विश्व में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में लोकप्रिय हो गया है। विश्व में कई देश हेतु पर्यटन महत्व का विषय है। अपने माल और सेवाओं के व्यापार से ये देश बहुत अधिक मात्रा में धन प्राप्त करते हैं। यह पर्यटन उद्योग सेवा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं।

पर्यटन की परम्परा को उद्योग में तभी बदला जा सकता है जबकि हमारा राज्य अपने पर्यटन के आधार और आधारभूत संरचनाओं को विस्तृत तथा सुदृढ़ करे। इस परिपेक्ष्य में कुछ आवश्यक बिन्दुओं जैसे सड़क, रेल और वायु सम्पर्कों का विकास, तथा हॉस्पिटलीटी उद्योग का विस्तार, शान्ति और विधि.व्यवस्था का वातावरण निर्माण अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है। विगत एक वर्ष से कुछ अधिक समय में इन बिन्दुओं पर गुणात्मक सुधार दिखाई दे रहा है और सरकार, स्थानीय समुदाय तथा निजी निवेशकों के मन मे यह आशा बंधी है कि राज्य में पर्यटन की संभावनाओं को एक प्रभावी उद्योग का रूप दिया जा सकेगा।

दरभंगा प्रमंडल पूर्व मध्य रेलवे के प्रमुख जंक्शन समस्तीपुर एवं दरभंगा द्वारा देश के सभी रेल मार्गों से जुड़ा है। इस रेल मार्गों द्वारा भारत के उत्तरी सीमा से लगे जयनगर एवं नरकटियागंज रेलवे स्टेशन तक देश के सभी भागों से आने जाने की सुविधा है। प्रमुख दर्शनीय स्थलों तक पक्की बारह मासी सड़कों का जुड़ाव है जहां यातायात की व्यवस्था है। दरभंगा प्रमंडल के प्रमुख नगरों यथा दरभंगा, मधुबनी व समस्तीपुर में सभी श्रेणी के व्यक्तियों के ठहरने के लिए होटलें मौजुद है। दरभंगा में 20 से 25 नन ए० सी० होटलें तथा 10 से 12 ए० सी० होटलें, मधुबनी में 4 ए० सी० तथा 7 नन ए० सी० होटलें है। इसके अलावा यहां रोसड़ा, बिरौल, कुशेश्वरस्थान, राजनगर, झंझारपुर, जयनगर आदि स्थानों पर आवासीय, चिकित्सकीय, मनोरंनात्मक एवं प्रशासनिक सुविधाऐं उपलब्ध है।

मिथिलांचल के दर्शनीय स्थलों का पर्यटनीय विकास के लिए सरकारी स्तर पर तथा नीजी कम्पनियों व व्यक्तियों द्वारा पूंजी निवेश कर होटल, हॉस्पीटलीटी एवं अन्य ढाँचागत सुविधाऐं प्रदान करने के उचित अवसर

मौजुद है। इस क्षेत्र में निवेशकों को उचित लाभ मिलने एवं क्षेत्रीय जीवन स्तर संवारने का सुन्दर वातावरण उपलब्ध है।[1]

बिहार के सड़कों में सुधार हुआ है। नए राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य उच्च पथों का निर्माण किया जा रहा है जो प्रमुख दर्शनीय स्थलों के आसपास से होकर गुजरती है। मिथिलांचल के पर्यटन केन्दों को विकसित बनाने हेतु बिहार सरकार के द्वारा विकसित किए जा रहे आधारभूत संरचनाओं के अलावे पर्यटन विभाग द्वारा भी श्रम एवं पूंजी लगाकर इसे विकसित किया जा सकता है। यहाँ पाँच सितारा होटल, उच्च स्तरीय मनोरंजन गृह की स्थापना, तथा कई सृजनात्मक कार्यों द्वारा इसमें सफलता प्राप्त किया जा सकता है और मिथिलांचल के इन नैसर्गिक उपहारों से बदलते हुए वैश्विक परिवेश में पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। इससे लोगों के रोजगार एवं आय में वृद्धि होगी तथा क्षेत्रीय विकास के साथ.साथ बिहार आर्थिक सुसम्पन्न राज्य बनकर राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विख्यात हो सकेगा।

मिथिलांचल में आधारभूत संरचना

मिथिला (दरभंगा प्रमंडल) के पर्यटन केन्द्रों के लिए आधारभूत संरचनाओं में विकास हुआ है। वर्तमान में उपलब्ध आधारभूत संरचनाऐं निम्नलिखित है। इन आधारभूत संरचनाओं के साथ–साथ अन्य आधारभूत संरचनाओं का समुचित विकास कर देशी एवं विदेशी मुद्रा अर्जन करने में सफलाता पायी जा सकती है। इसके लिए निम्न सुविधाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

- **ट्रांसपोर्टेसन पर ध्यान देकर** :– मिथिलांचल (दरभंगा प्रमंडल) में वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग की पहुचँ है। वर्ष 2015 से 2018 तक दरभंगा प्रमंडल में NH की कुल लंबाई 352 कि.मी. है।[2] इस्ट–वेस्ट कॉरीडोर जो भारत के पूर्वी तट को पश्चिमी तट से सीतामढ़ी, दभंगा, मधुबनी के रास्ते जोड़ती है, पर्यटन के लिहाज से बहुत ही कारगर है। इसे ईश्वरीय संयोग कहा जाय कि मिथिला की सांस्कृतिक धरोहर अनेको पर्यटन केन्द्र इस मुख्य मार्ग से सीधे जुड़े है। N.H – 57, N.H – 108, तथा अभी कुशेश्वर स्थान फोरलेन सड़क निर्माणाधीन है। **कुल मिलाकर सड़क मार्ग यहाँ के पर्यटक स्थलों तक अच्छी पहुँच रखतें है। इसे अल्प श्रम एवं पूँजी लगाकर समुन्नत किया जा सकता है।**
- **रेल मार्ग** : मिथिलांचल का प्रमुख रेलवे स्टेशन ''दरभंगा जंक्शन'' है जो पूर्व मध्य रेल का एक प्रमुख केन्द्र है। यह जंक्शन देश के सभी भागों से जुड़ा हुआ है तथा देश के प्रत्येक क्षेत्रों में यहां से रेलवे यातायात सुविधा प्राप्त किया जा सकता है। मधुबनी व समस्तीपुर तथा बिरौल जंक्शन भी पर्यटनीय उद्योग में अधिक सहयोग पहुँचा सकते है।
- **हवाई मार्ग (Air ways)** : दरभंगा प्रमंडल के दोनो जिला मुख्यालय दरभंगा व मधुबनी में हवाई अड्डा मौजूद है। हालाँकि यहाँ से यात्री सुविधा के लिहाज से उन्नत हवाई अड्डा नहीं है तथापि हाल के दिनों में दरभंगा, कोलकाता हवाई यात्रा सप्ताह में दो दिन प्रारंभ किया गया था जो कुछ दिनों बाद बन्द हो गया। जय प्रकाश नारायण अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना यहाँ के हवाई मार्ग के लिए उपलब्ध है।

कुल मिलाकर यहाँ के यातायात सुविधा में सड़क मार्ग तथा रेलमार्ग में अति अल्प श्रम एवं पूँजी की आवश्यक्ता होगी तथा हवाई मार्ग को विकसित करने के लिए अधिक ध्यान देने की जरूरत है। इन मार्गों से न केवल पर्यटनीय विकास बल्कि समेकित औद्योगिक विकास में मदद मिलेगी। आगामी महिनों में दरभंगा हवाई अड्डा से उड़ान की प्रबल संभावना प्रतीत हो रही है।

- **होटल्स (Hotels)** :– दरभंगा प्रमंडल उत्तर बिहार का एक प्रमुख सांस्कृतिक एवं व्यापारिक शहर है। यहाँ पूर्व काल से ही व्यापार फलीभूत रहा है, इस क्रम में यहाँ घरेलु, देशी व विदेशी व्यक्तियों का आना–जाना सालों भर लगा रहता है। दरभंगा शहर उत्तर बिहार का शिक्षा एवं चिकित्सा का भी एक बड़ा केन्द्र है। यहां दो–दो विश्वविद्यालय निकटस्थ संचालित हैं। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर, दरभंगा एक विख्यात व प्रसिद्ध विश्वविद्यालय है। इसमें **लाखों छात्र** अध्ययनरत हैं। वहीं बिहार का एकमात्र संस्कृत विश्वविद्यालय ''कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, कामेश्वर नगर, दरभंगा यहीं संचालित है। इस विश्वविद्यालय में देश के कोने–कोने से लाखों छात्र संस्कृत, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, दर्शन, न्याय, शिक्षा शास्त्र , वेद की शिक्षा ग्रहण करने आतें हैं।

बिहार का प्राचीन व प्रसिद्ध दोनों विश्वविद्यालय दरभंगा महाराजा के महल में संचालित हैं। जिस महलों की शिल्प कला तथा प्राकृतिक व अध्यात्मिक सौंदर्यता भी लोगों को यहाँ आने व शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा देते है।

वहीं बिहार का प्रसिद्ध व पुराना चिकित्सा महाविद्यालय दरभंगा चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल अपनी गौरवपूर्ण कार्य को लेकर देश प्रसिद्ध हैं । यहाँ न केवल देश बल्कि अन्य देशों से लोग स्वास्थ्य सुविधा तथा अध्ययन–अध्यापन के लिए आ रहें हैं।

इसके आतिरिक्त दरभंगा अभियंत्रण महाविद्यालय, चन्द्रधारी विधि महाविद्यालय, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली का क्षेत्रीय केन्द्र, मौलाना आजाद नेशनल युनिवर्सिटी का क्षेत्रीय केन्द्र, प्रमंडल मुख्यालय, व पुलिस केन्द्र, प्रसिद्ध व बड़ा रेलवे जंक्शन, दो–दो संग्रहालय, अनेकों महाविद्यालय, तथा पर्यटन से भरी पड़ी विरासत के फलवरूप यहाँ रात्री ठहराव वाले व्यक्तियों का आना जाना पूर्व से ही हैं। अस्तु यहां 10–15 ए० सी० होटलें, 20–25 नन ए० सी० होटलें, लॉज, छात्रावास, सर्किट हाउस मौजूद हैं।

पर्यटन उद्योग को बढावा देने के दृष्टिकोण से यहां होटल एवं हॉस्पीटिलीटी में अपार संभावनाएं मौजूद हैं। पर्यटन उद्योग की दृष्टि से दरभंगा में होटल एवं हॉस्पीटिलीटी को अधिक सशक्त, समुन्नत, सुदृढ़ एवं सिस्टेमेटिक बनाने की जरूरत है। जिसे अल्प श्रम एवं पूँजी लगाकर बेहतर किया जा सकता है।

दरभंगा प्रमंडल के अन्य दो शहरों समस्तीपुर व मधुबनी में भी यात्री ठहराव की अच्छी व्यवस्था है। समस्तीपुर रेलवे का एक बड़ा जंक्शन है। यह मशाला, तम्बाकू, मिर्च, मछली उत्पादक स्थानों में अग्रणी है जिस कारण संपूर्ण देश के व्यापारी व्यापार करने यहाँ आते हैं। यहाँ 8–10 A.C होटल एवं 10 से 15 Non A.C होटलें मौजूद हैं। पर्यटन केन्द्रो व दर्शनीय स्थलों पर भी यात्री ठहराव की व्यवस्था है।

पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी यहाँ उपरोक्त उद्योग में भी अपार संभावनाएं मौजूद है, तथा इसे अधिक उन्नत व सुलभ बनाने की आवश्यक्ता है।

मधुबनी दरभंगा प्रमंडल का उत्तरी जिला है जो बिहार एवं भारत का भी उत्तरी जिला है तथा इसकी सीमा पड़ोसी देश नेपाल की सीमा से लगती है। मधुबनी मिथिला की हृदयस्थली है। यहाँ पान, मखान की उन्नत खेती होती है। संपूर्ण मिथिला क्षेत्र जल से भरा पड़ा है। यहाँ जल संचयन एवं बेहतर प्रबंधन कर मछली पालन तथा पन बिजली उत्पादन की भी असीम संभावनाएं मौजूद है। मधुबनी खादी उद्योग का एक बड़ा व प्रसिद्ध केन्द्र है तथा मिथिला पेंटिग्स के लिए विश्व विख्यात है। यहाँ अनेकानेक पर्यटन स्थल मौजूद है तथा सालों भर घरेलू, देशी व विदेशी पर्यटक आते है। यहाँ 6.7 A.C Hotels एवं 14 से 15 Non A.C Hotels हैं।

पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ भी Hotel एवं Hospitality उद्योग में असीम संभावनाएं है। पर्यटन उद्योग को विकसित कर इन क्षेत्रो में रोजगार व विदेशी मुद्रा अर्जन कर क्षेत्र, राज्य व राष्ट्र को एक नया आयाम मिल सकता है।

पुलिस व प्रशासन (Police and Administration) : दरभंगा प्रमंडल के सभी जिला मुख्यालयों में उन्नत व क्रियाशील पुलिस केन्द्र संचालित हैं तथा बेहतर पुलिसिंग व्यवस्था है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से भी यहाँ प्रत्येक स्थल पर प्रशासन चुस्त दुरूस्त एवं क्रियाशील व तत्पर हैं। प्रत्येक धर्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व पर्यटन स्थलों पर इनकी सहायता व सेवा भरी नजर रहती है। साथ ही प्रत्येक विशेष अवसरों पर ये पूर्ण सहायता व सुरक्षा प्रदान करतें हैं। विशेष पर्यटन एवं भीड़ भाड़ वाले स्थानों पर संस्थान द्वारा अलग से नीजी सुरक्षा के भी उपाय किये जाते है।

पर्यटन उद्योगों के दृष्टि से यहाँ बेहतर पुलिस–प्रशासन प्रबंधन की अधिक गुंजाइश है तथा वर्तमान राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर डालने के उपरांत यहाँ पुलिस प्रशासन की व्यवस्था को अधिक सशक्त बनाने हेतु सरकार से सहयोग की अधिक अपेक्षा है।

उपरोक्त के साथ–साथ पर्यटनीय क्षेत्रों में संचार–साधनों में वृद्वि, मनोरंजन साधनों में वृद्धि, बिजली, पानी, शौचालय, स्नानागार, रेस्टुरेन्ट, भोजन गृह आदि की उन्नत व्यवस्था करनी होगी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मिथिलांचल के दर्शनीय स्थलों का पर्यटनीय विकास के लिए सरकारी स्तर पर तथा नीजी कंपनीयों व व्यक्तियों द्वारा पूँजी निवेश कर होटल, हॉस्पीटलीटी एवं अन्य ढाँचागत सुविधाऐं प्रदान करने के उचित अवसर मौजूद है। इस क्षेत्र में निवेशकों को उचित लाभ मिलने एवं क्षेत्रीय जीवन स्तर संवरने का सुन्दर वातावरण उपलब्ध है।

बिहार के सड़कों में सुधार हुआ है। नए राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य उच्च पथ का निर्माण किया जा रहा है जो प्रमुख दर्शनीय स्थलों के आस–पास से होकर गुजरती है। मिथिलांचल को पर्यटन केन्द्रो में विकसित बनाने हेतु बिहार सरकार एवं केन्द्र सरकार के द्वारा विकसित किए जा रहे आधारभूत संरचनाओं के अलावे पर्यटन विभाग द्वारा भी श्रम एवं पूँजी लगाकर इसे विकसित किया जा सकता है। यहाँ पाँच सितारा होटल, उच्च स्तरीय मनोरंजन गृह की स्थापना तथा कई सृजनात्मक कार्यो द्वारा इसमें सफलता प्राप्त किया जा सकता है और मिथिलांचल के इन नैसर्गिक उपहारों से बदलते हुए वैश्विक परिवेश में पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। इससे लोगों को रोजगार एवं आय में वृद्धि होगी तथा क्षेत्रीय विकास के साथ–साथ बिहार आर्थिक सुसम्पन्न राज्य बनकर राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विख्यात हो सकेगा।

मिथिलांचल में हवाई सुविधाओं का अभाव तथा प्रति वर्ष आने वाली बाढ़ एवं भूकम्प का हाई रिस्क जोन इसके आधारभूत संरचनाओं के विकास में बाधक तत्व हैं। इस क्षेत्र के पर्यटनीय विकास के प्रति सरकार का उचित ध्यान नहीं देना तथा इस क्षेत्र में निवेश का अभाव भी एक प्रमुख समस्या रहा है।

निवेशकों को आकर्षित कर एवं सरकारी स्तर पर ध्यान देकर इस क्षेत्र के पर्यटनीय विकास की समस्याओं को बहुत कम किया जा सकता है, तथा बेहतर परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

दरभंगा प्रमंडल के प्रमुख पर्यटन केन्द्रों पर उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं को निम्न तालिका से अवलोकन किया जा सकता है –

तालिका –1

क्र० सं०	प्रमुख दर्शनीय स्थल	निकटतम रेवले स्टेशन	रेलवे से दूरी व दिशा	सड़क सम्पर्क	अन्य सुविधाऐं (आवासीय, चिकित्साऐं आदि)
1	कपिलेश्वर स्थान	मधुबनी	4 किमी पश्चिम	राज्यउच्च पथ	मधुबनी में उपलब्ध
2	उग्रनाथ (उगना) स्थान	उगना हॉल्ट	0.1 किमी पूरब	पक्की सड़क	पंडौल, सकरी
3	अहिल्या स्थान	कमतौल	3 किमी पश्चिम	पक्की सड़क	कमतौल में उपलब्ध
4	गौतम आश्रम	कमतौल	3 किमी पश्चिम	राज्यउच्च पथ	कमतौल में उपलब्ध
5	कालिदास डीह	मधुबनी	20 किमी पश्चिम	राज्यउच्च पथ	बेनीपट्टी अनुमंडल
6	उच्चैठ भगवती मंदिर	मधुबनी	20 किमी पश्चिम	राज्यउच्च पथ	बेनीपट्टी अनुमंडल
7	राजनगर	राजनगर	0.1 किमी पश्चिम	राज्यउच्च पथ	राजनगर में उपलब्ध
8	बलिराजगढ़	फूलहड़	3 किमी उत्तर	पक्की सड़क	बाबू बरही में
9	कुशेश्वर स्थान	बिरौल	20 किमी उत्तर	राज्यउच्च पथ	कुशेश्वर स्थान में
10	श्यामा मंदिर व दरभंगा के दर्शनीय स्थल	दरभंगा	0.2 किमी	राज्यउच्च पथ	दरभंगा में उपलब्ध
11	विदेश्वर स्थान	लोहना	1 किमी पश्चिम	राष्ट्रीय राजमार्ग	झंझारपुर, सकरी में

(संदर्भ स्त्रोत – स्व निरीक्षण)

आधारभूत संरचनाओं का वर्तमान परिदृश्य :

अतः उपरोक्त कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थलों में उपलब्ध आधारभूत संरचनाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हे विकसित बनाने में हमें श्रम एवं पूंजी की आवश्यकता होगी। इस हेतु हमें विषमताओं से उपर उठकर अपने क्षमता का पहचान व दृढ़ निश्चयी बनना होगा जिससे संपूर्ण बिहार के उच्च विकास किए जाने में मदद मिल सकेगा।

आधारभूत संरचनाओं की समस्याऐं :

मिथिलांचल का दरभंगा प्रमंडल पर्यटनीय विकास हेतु धरोहरों से परिपूर्ण है। यह पूर्ण आधारभूत संरचनाओं के अभाव में अपनी सम्पूर्ण पहचान बनाने में कठिनाईयों का सामना कर रहा है। प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ और भूकंप का हाईरिस्क जोन इसके आधारभूत संरचनाओं के विकास में एक प्रमुख बाधक तत्व है। यह इस क्षेत्र के पर्यटनीय विकास में एक प्रमुख बाधक तत्व है। इस क्षेत्र के पर्यटनीय विकास के प्रति सरकार का उचित ध्यान नहीं देना तथा इस क्षेत्र में निवेश का अभाव भी एक प्रमुख समस्या रहा है।

निवेशकों को आकर्षित कर एवं सरकारी स्तर पर ध्यान देकर इस क्षेत्र के पर्यटनीय स्थलों की समस्याओं को बहुत कम किया जा सकता है।

मिथिलांचल के दरभंगा क्षेत्र की पर्यटनीय विकास हेतु सरकारी स्तर पर एवं नीजी निवेशकों द्वारा पूँजी लगाकर इस क्षेत्र में होटल, हॉस्पिटलीटी एवं मनोरंजन के साधनों को विकसित किया जा सकता है।

हवाई सुविधाओं का अभाव भी इस क्षेत्र में एक बड़ी समस्या है। हवाई सुविधा मिलने पर विदेशी पर्यटकों को आकर्षित कर इस उद्योग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

24 दिसम्बर 2018 को बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, बिहार के उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, भारत सरकार के मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा दरभंगा हवाई अड्डा से बेंगलुरू एवं दिल्ली तक की हवाई सेवा का उद्घाटन किया गया । यहाँ जनवरी 2019 से निरंतर हवाई सुविधा उपलब्ध होने के संकेत मिले थे जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं हैं। इस सुविधा के उपलब्ध होने से दरभंगा प्रमंडल के पर्यटन केन्द्रों तक विदेशी पर्यटकों की पहुँच को बढ़ावा मिलने की प्रबल संभावना है। 27 दिसम्बर 2018 को बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार बिहार के उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी एवं बिहार के पथ निर्माण मंत्री श्री नंदकिशोर यादव द्वारा दरभंगा जिले के बिरौल से सहरसा के गंडौल तक उच्च पथ जनता को समर्पित किया गया। इस पथ से मिथिला एवं कोशी का सड़क संपर्क सीधा जुड़ गया है। मिथिलांचल एवं कोशीअंचल के जुड़ जाने से बिहार एवं देश के पुर्वी भागों से पर्यटकों को मिथिलांचल के दरभंगा प्रमंडल आने में अब देर नहीं है। इस सड़क के बनने से न केवल देश बल्कि विदेशी पुर्वी पर्यटकों (भुटान आदि देश) को इस क्षेत्र में सुगमता से आने की संभावना बढ़ जाती है।

बिहार सरकार द्वारा प्रदेश के अन्य क्षेत्रों खासकर मिथिलांचल के विभिन्न भागों में सड़कों के विकास कार्य जारी है। बिहार सरकार द्वारा पर्यटन के विकास के लिये पर्यटन क्षेत्रों को 12 सर्किटों में बाँटकर विकास की रूपरेखा तैयार की गयी है। जिसमें मिथिलांचल का महत्वपूर्ण योगदान है।

बिहार के टुरिस्ट मैप अग्र पृष्ठ पर दृष्टव्य है –

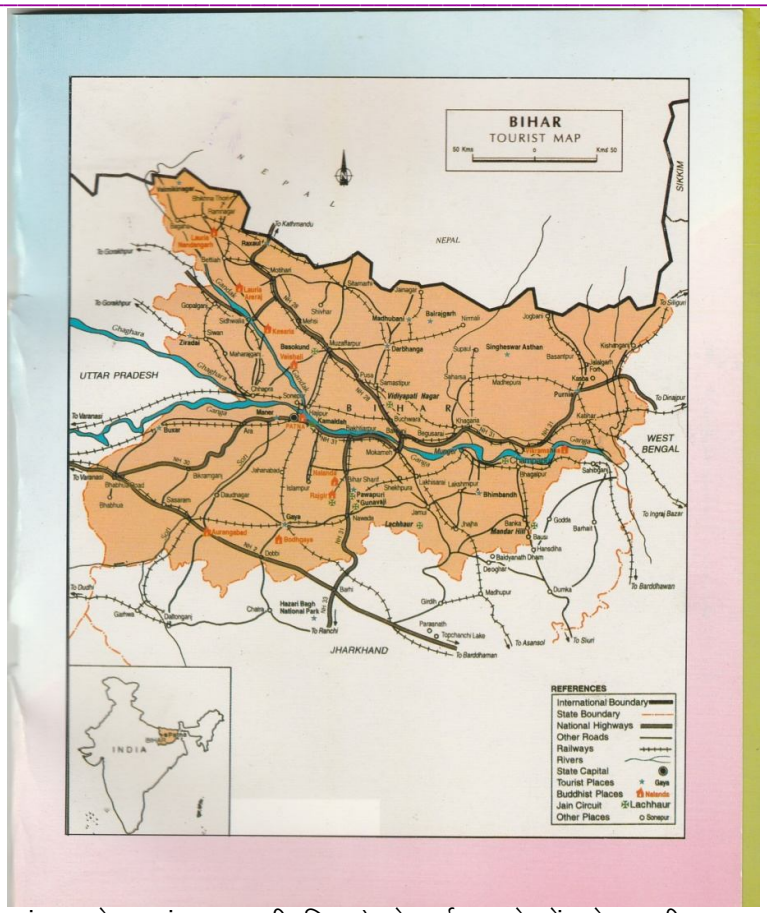

मिथिलांचल (दरभंगा प्रमंडल के दरभंगा मधुबनी जिला) के पर्यटन केन्द्रों को नजरी नक्शा (वर्ष 2012) से निम्न रूप में देखा जा सकता है –

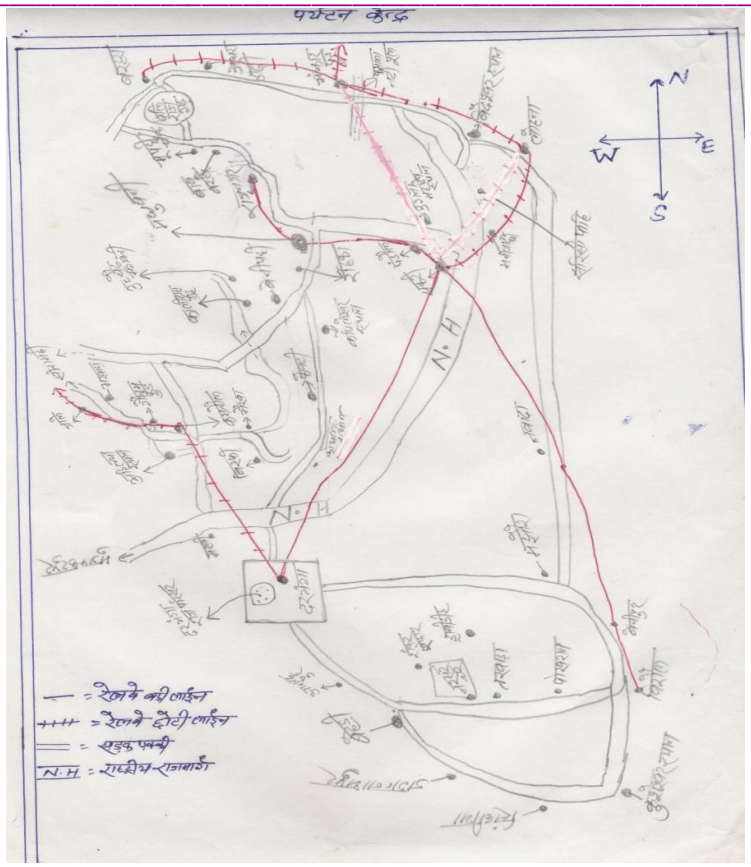

- **जल की समस्या :**

पानी की समस्या से निजात पाने के लिए दरभंगा जिला प्रशासन की ओर से हर संभव प्रयास किया जा रहा है। बढ़ती जल संकट को लेकर आयोजित बैठक में डीएम डॉ. त्यागराजन एस एम ने बताया है कि दरभंगा नगर निगम क्षेत्र में 150 अतिरिक्त स्टैंड पोस्ट तुरंत लगाये जायेंगे। उन्होंने कहा कि नगर निगम के जिन वार्डों में पानी की ज्यादा किल्लत हो गई है उन वार्डों में पानी के टैंकर भेज कर पानी की आपूर्त्ति की जा रही है। नगर आयुक्त श्याम किशोर को व्यक्तिगत रूप से नगर निगम क्षेत्र में पानी की समस्या को दूर करने के लिए पहल करने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि नगर निगम के टैंकर एवं पीएचईडी के टैंकर संयुक्त रूप से पानी की आपूर्त्ति करेगी। पीएचईडी के कार्यपालक अभियंता ने कहा कि खराब चापाकलों को युद्ध स्तर पर ठीक कराया जा रहा है। आवश्यकतानुसार नया चापाकल गाड़ने का भी कार्य चल रहा है। जलापूर्त्ति पाइप में कहीं–कहीं लीकेज होने की भी शिकायतें मिली है। जिसे तत्काल ठीक कराने की कोशिश की जा रही है। नगर आयुक्त ने बताया कि पानी की समस्या को लेकर नगर निगम कार्यालय में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। नियंत्रण कक्ष में हर समय 8 से 10 पानी के टैंकर उपलब्ध रहेगा। जिससे आवश्यकतानुसार वार्डों में पानी की आपूर्त्ति की जायेगी। इसमें पीएचईडी के टैंकर भी सम्मिलित होंगे। वहीं बुडको की ओर से डीप बोरिंग कर नगर में जलापूर्त्ति योजना पर कार्य किया जा रहा है। डीएम ने इस कार्य में तेजी लोने को कहा है।

सड़क जाम की समस्या :

शहरवासियों की समस्याओं की फेहरिस्त में सड़क जाम सबसे ऊपर है. दिनों दिन यह समस्या विकराल होती जा रही है. इसकी प्रमुख वजह सड़क का अतिक्रमण है. सबकुछ आंखों के सामने होने के बावजूद प्रशासन लापरवाह बना है. इससे एक तरफ जहाँ आम राहगीर परेशानी झेल रहे हैं, वहीं इस कारण बड़ी संख्या में कारोबारियों का कारोबार भी प्रभावित हो रहा है। उल्लेखनीय है कि नगर की सड़कों पर दुकानदारों ने अपना

कब्जा जमा रखा है। बेखौफ होकर कई जगहों पर तो आधी से अधिक सड़क का अतिक्रमण कर दुकानें सजा रखी हैं। शहर की कई ऐसी गलियां हैं, जहां जाम की वजह से पैदल चलना भी कठिन होता है। वन–वे के बाद भी समस्या दो भागों में बंटे शहर को जोड़ने के लिए तीन मुख्य सड़क हैं, हालांकि इसमें वीआइपी रोड तथा दरभंगा–लहेरियासराय पथ का उपयोग अधिकांश लोग करते हैं. बावजूद सड़क जाम होता है. यहां की नीयति सी बन गयी है. प्रशासन ने इसके लिए दोनों मुख्य सड़कों पर वन–वे ट्रैफिक लागू कर रखा है. फिर भी समस्या जस की तस या यूं कहें बढ़ती ही जा रही है. वन–वे ट्रैफिक रूल के उल्लंघन के साथ ही सड़कों का अतिक्रमण इसकी जड़ में हैं। सड़क के दोनों तरफ अतिक्रमण शहर की ह्रदय स्थली कहे जाने वाले दरभंगा टावर का अलुआ गद्दी हरी सब्जी व फलों का मुख्य बाजार है. सड़क पर वाहन खड़ी कर सामान लोड–अनलोड करना तो आम बात है, लेकिन इस जगह पर दोनों तरफ से नाला से आगे बढ़ सड़क पर दुकान सजी रहती है. सुबह के समय में तो पैदल जाना भी मुश्किल होता है। यह नजारा कटकी बाजार में प्रवेश स्थल पर भी नजर आता है। इस समस्या के कारण बड़ी संख्या में लोग मुख्य बाजार तक जाने से परहेज करते हैं जाहिर तौर पर इसका असर कारोबारियों के धंधे पर पड़ता है। लहेरियासराय गुदरी में प्रवेश कठिन होता है। लहेरियासराय के कॉमर्सियल चौक पर गुदरी बाजार में प्रवेश स्थल पर दानों तरफ सब्जी व फलों की दुकान सजी रहती है। मुश्किल से दो से तीन फुट चौड़ी सड़क राहगीरों को मयस्सर हो पाती है। कटहलबाड़ी आरओबी के नीचे तो पूरी की पूरी दुकान ही सड़क पर सजी रहती है. यहां अधिकांश समय लोगों को जाम का सामना करना पड़ता है।

- **मधुबनी :**

यह जिला 5 अनुमंडल, 21 प्रखंडों, 399 पंचायतों तथा 1111 गाँवों में बँटा है। विधि व्यवस्था संचालन के लिए 18 थाने एवं 2 जेल है। पूर्ण एवं आशिंक रूप से मधुबनी जिला 2 संसदीय क्षेत्र एवं 11 विधान सभा क्षेत्र में विभाजित है।

अनुमंडल–मधुबनी, बेनीपट्टी, झंझारपुर, जयनगर एवं फुलपरास

प्रखंड–मधुबनी सदर (रहिका), पंडौल, बिस्फी, जयनगर, लदनिया, लौकहा, झंझारपुर, बेनीपट्टी, बासोपट्टी, राजनगर, मधेपुर, अंधराठाढ़ी, बाबूबरही, खुटौना, खजौली, घोघरडीहा, मधवापुर, हरलाखी, लौकही, लखनौर, फुलपरास, कलुआही

कृषि एवं उद्योग :

मधुबनी मूलतः एक कृषि प्रधान जिला है। यहाँ की मुख्य फसलें धान, गेहूं, मक्का, मखाना आदि है। भारत में मखाना के कुल उत्पादन का 80% मधुबनी में होता है। आधारभूत संरचना का अभाव एवं निम्न शहरीकरण (मात्र 3.65%) उद्योगों के विकास में बाधा है। अभी मधुबनी पेंटिंग की 76 पंजीकृत इकाईयाँ, फर्नीचर उद्योग की 13 पंजीकृत इकाईयाँ, 3 स्टील उद्योग, 03 प्रिंटिंग प्रेस, 03 चूरा मिल, 01 चावल मिल तथा 3000 के आसपास लघु उद्योग इकाईयाँ जिले में कार्यरत है। पशुपालन एवं डेयरी को आधार बनाकर इनपर आधारित उद्योग लगाया जा सकता है। लेकिन अभी तक मात्र 30 दुग्ध समीतियाँ ही कार्यरत है। मछली, मखाना, आम, लीची, तथा गन्ना जैसे कृषि उत्पाद के अलावे मधुबनी से पीतल की बरतन एवं हैंडलूम कपड़े का राज्य में तथा बाहर निर्यात किया जाता है।

शैक्षणिक संस्थान :

शिक्षा के प्रसार के मामले में मधुबनी एक पिछड़ा जिला है। साक्षरता मात्र 41.97% है जिसमें स्त्रियों की साक्षरता दर महज 26.54% है। आधारभूत संरचना के अभाव को शिक्षा क्षेत्र में पिछड़ेपन का मुख्य कारण माना जाता है। जिले में शिक्षण संस्थानों की कुल संख्या इस प्रकार हैः

- प्राथमिक विद्यालयः 901
- मध्य विद्यालयः 382

- माध्यमिक विद्यालयः 119
- डिग्री कॉलेजः 27

स्थिति में सुधार हेतु बिहार शिक्षा परियोजना के अधीन अभी 98 प्राथमिक विद्यालय खोले गए हैं तथा 83 प्राथमिक विद्यालयों को मध्य विद्यालय में उत्क्रमित किया जा रहा है। मधुबनी जिले के तमाम कॉलेज ललित नारायण विश्वविद्यालय दरभंगा से संवद्ध हैं जबकि आबादी को देखते हुए जिले में एक विश्वविद्यालय की सख्त आवश्यकता है। इसके अलावा यहां मेडिकल कॉलेज और अन्य इंजीनियरिंग कॉलेज भी नहीं है। मधुबनी के लोग पढ़ाई लिखाई में काफी जहीन माने जाते हैं और उन्होंने राज्य और देश के अंदर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है।

कला एवं संस्कृति :

मधुबनी मिथिला संस्कृति का अंग एवं केंद्र विंदु रहा है। राजा जनक और सीता का वास स्थल होने से हिंदुओं के लिए यह क्षेत्र अति पवित्र एवं महत्वपूर्ण है। मिथिला पेंटिंग के अलावे मैथिली और संस्कृत के विद्वानों ने इसे दुनिया भर में खास पहचान दी है। प्रसिद्ध लोककलाओं में सुजनी (कपड़े की कई तहों पर रंगीन धागों से डिजाईन बनाना), सिक्की–मौनी (खर एवं घास से बनाई गई कलात्मक डिजाईन वाली उपयोगी वस्तु) तथा लकड़ी पर नक्काशी का काम शामिल है। सामा चकेवा एवं झिझिया मधुबनी का लोक नृत्य है। मैथिली, हिंदी तथा उर्दू यहां की मुख्य भाषा है। यह जिला महाकवि कालीदास, मैथिली कवि विद्यापति तथा वाचस्पति जैसे विद्वानों की जन्मभूमि व कर्मभूमि रही है।

मधुबनी पेंटिंग :

पर्व त्योहारों या विशेष उत्सव पर यहां घर में पूजागृह एवं भित्ति चित्र का प्रचलन पुराना है। 17 सदी के आस–पास आधुनिक मधुबनी कला शैली का विकास माना जाता है। मधुबनी शैली मुख्य रूप से जितवारपुर (ब्राह्मण बहुल) और रतनी (कायस्थ बहुल) गाँव में सर्वप्रथम एक व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ था। यहाँ विकसित हुए पेंटिंग को इस जगह के नाम पर ही मधुबनी शैली का पेंटिंग कहा जाता है। इस पेंटिंग में पौधों की पत्तियों, फलों तथा फूलों से रंग निकालकर कपड़े या कागज के कैनवस पर भरा जाता है। [4] मधुबनी पेंटिंग शैली की मुख्य खासियत इसके निर्माण में महिला कलाकारों की मुख्य भूमिका है। इन लोक कलाकारों के द्वारा तैयार किया हुआ कोहबर, शिव–पार्वती विवाह, राम–जानकी स्वयंवर, कृष्ण लीला जैसे विषयों पर बनायी गयी पेंटिंग में मिथिला संस्कृति की पहचान छिपी है। पर्यटकों के लिए यहाँ की कला और संस्कृति खासकर पेंटिंग कौतुहल का मुख्य विषय रहता है। मैथिली कला का व्यावयायिक दोहन सही मायने में 1962 में शुरू हुआ जब एक कलाकार ने इन गाँवों का दौरा किया। इस कलाकार ने यहां की महिला कलाकारों को अपनी पेंटिंग कागज पर उतारने के लिए प्रेरित किया। यह प्रयोग व्यावसायिक रूप से काफी कारगर साबित हुई। आज मधुबनी कला शैली में अनेकों उत्पाद बनाए जा रहे हैं जो बाजार फैलाता ही जा रहा है। वर्तमान में इन पेंटिग्स का उपयोग बैग और परिधानों पर किया जा रहा है। इस कला की मांग न केवल भारत के घरेलू बाजार में बढ़ रही है वरन विदेशों में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। अन्य उत्पादों में कार्ड, परिधान, बैग, दरी आदि शामिल है।

• परिवहन :

सड़क मार्ग :

मधुबनी बिहार के सभी मुख्य शहरों से राजमार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है। यहाँ से वर्तमान में तीन राष्ट्रीय राजमार्ग तथा दो राजकीय राजमार्ग गुजरती हैं। मुजफ्फरपुर से फारबिसगंज होते हुए पूर्णिया जानेवाला राष्ट्रीय राजमार्ग 57 मधुबनी जिला होते हुए जाती है। यह सड़क स्वर्णिम चतुभुर्ज योजना का अगल चरण है जिसे ईस्ट–वेस्ट कॉरीडोर कहा जाता है। इसकी योजना वाजपेयी सरकार के वक्त बनी थी। इस सड़क के बन जाने से मधुबनी, दरभंगा बल्कि पूरे मिथिला क्षेत्र की ही तस्वीर बदल रही है। इस सड़क के तहत कोसी पर बनने वाले पुल की लंबाई करीब 2.2 किलोमीटर है। जिससे कोसी के पूरब और पश्चिम में संपर्क सुलभ हो पाया है।

यह सड़क चार लेन की बनी है और इसके बनने से मधुबनी का संपर्क सहरसा, सुपौल, पूर्णिया और मिथिला के पूर्वी इलाके से एक बार फिर जुड़ गया है जो सन् 1934 के भूकंप से पहले कायम था। पूरा इलाका समाजिक और आर्थिक रूप से एक इकाई में बदल गया है। इस पुल के महज बनने मात्र से इस इलाके की राजनीतिक चेतना मोड़ ले चुकी है। कुछ लोगों की राय में इस पुल के बनने से एक अखिल मिथिला राज्य की मांग जोड़ पकड़ सकता है। 55 किलोमीटर लंबी राष्ट्रीय राजमार्ग 105 है जो दरभंगा को मधुबनी के जयनगर से जोड़ता है। राजधानी पटना से सड़क मार्ग के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

रेल मार्ग :

मधुबनी भारतीय रेल के पूर्व मध्य रेलवे क्षेत्र के समस्तीपुर मंडल में पड़ता है। दिल्ली–गुवाहाटी रूट पर स्थित समस्तीपुर जंक्शन से बड़ी गेज की एक लाईन मधुबनी होते हुए नेपाल सीमा पर जाती है। [6] मधुबनी से गुजरने वाली एक अन्य रेल लाईन सकरी से घोघरडीहा होते हुए फॉरबिसगंज को जोड़ती है। 1996 के बाद रेल अमान परिवर्तन होने से दरभंगा होते हुए दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, अमृतसर, गुवाहाटी तथा अन्य महत्वपूर्ण शहरों के लिए यहाँ से सीधी ट्रेनें उपलब्ध है। इसके अलावा एक रेललाईन दरभंगा से सकरी और झंझारपुर होते हुए लोकहा तक नेपाल की सीमा को जोड़ती है। जिले के छोटी रेल लाईनों को बड़ी लाईन में बदलने का कार्य तेजी से चल रहा है। लौकहा रेलवे लाईन के निर्माण में कांग्रेस के वरिष्ट नेता ललित नारायण मिश्र का अहम योगदान है जिनका कार्यक्षेत्र मधुबनी ही था। वे झंझारपुर से सांसद हुआ करते थे।

हवाई मार्ग :

यहाँ से सबसे नजदीकी नागरिक हवाई अड्डा 146 कि०मी० दूर राजधानी पटना में स्थित है। लोकनायक जयप्रकाश हवाई क्षेत्र पटना (IATA कोड–PAT) अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने उपलब्ध है। इंडियन, किंगफिशर, जेट एयर, स्पाइस जेट तथा इंडिगो की उडानें दिल्ली, कोलकता और राँची के लिए उपलब्ध है।

मिथिला पेंटिंग :

मिथिला की सांस्कृतिक विरासत व मिथिला पेंटिंग के संवर्धन व उसे बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास व सहायता जिला प्रशासन की ओर से किया गया है कि विश्व प्रतिष्ठित मिथिला पेंटिग को और समृद्ध एवं संवर्द्धन किया जायेगा। मिथिला पेंटिंग के बारे में यह मान्यता है कि इस कला की शुरूआत महाराज जनक ने की थी। मिथिला पेंटिंग बिहार के दरभंगा, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सहरसा एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारंभ में फर्श एवं दीवारों पर रंगोली के रूप में बनाये जाने के बाद इस कला आधुनिक रूप में कागज, कपड़े, दीवार पर भी उतारी जा रही है।[7] मिथिला पेंटिंग के कलाकारों ने मधुबनी रेलवे स्टेशन के दीवारों पर लगभग 10,000 वर्ग फीट से अधिक में पेंटिंग करके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध प्राप्त की है। मिथिला पेंटिंग कला को सिखाने के लिए एक सुसज्जित भवन का निर्माण किया जायेगा। जिस भवन का नाम किलकारी भवन होगा। जनवरी 2019 में मधुबनी सौराठ सभा गाछी में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा मधुबनी पेंटिंग विद्यालय का उद्घाटन किया गया है। इस भवन के निर्माण के 22 बीघा सरकारी जमीन चिह्नि कर ली है। किलकारी भवन का निर्माण बिहार शैक्षणिक आधारभूत संरचना विकास निगम करेगी। सम्प्रति किलकारी योजना का कार्यालय दरभंगा के रामनंद मिश्र कन्या उच्च विद्यालय में चालू है। कार्यपालक अभियंता बिहार शैक्षणिक आधारभूत संरचना विकास निगम को किलकारी भवन का डीपीआर तैयार करने के लिए निर्देश दिया गया है। किलकारी भवन में छात्र व छात्राओं को मिथिला पेंटिंग की शिक्षा दी जायेगी। इस संस्थान में आर्ट टीचर की नियुक्ति होगी। मानव संसाधन विकास विभाग के अंतर्गत यह संस्थान कार्य करेगा। छात्र व छात्राओं को सामान्य पाठ्यक्रम के अलावा एक्स्ट्रा एक्टिविटी के रूप में मिथिला पेंटिंग की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। मिथिला क्षेत्र में सब जगह जाने के लिए वह रास्ता सहारा है। बुनियादी ढांचा का विकास हुआ है। इसका फायदा लोगों को मिल रहा है। कृषि उत्पाद का मूल्य अच्छा मिल रहा है। लक्ष्य के मुताबिक 2900 मेगावाट बिजली आपूर्ति हो रही है। अगले साल तक 4000 मेगावाट बिजली मिलेगी। सरकार द्वारा मिथिला पेंटिंग की पहचान देश व विदेश में बनाने के लिए बाहर से आनेवाले हर मेहमान को मिथिला पेंटिंग देकर सम्मानित करने का निर्णय प्रस्तावित है। ब्रिटिश सरकार के डिप्टी हाईकमिश्नर स्कॉट फर्सीडन मिथिला लोक

कला को देख उनके कायल हो गए। उन्होनें ब्रिटेन के पेंटिंग के बाजार में मिथिला पेंटिंग क विस्तार का आश्वासन दिया।

निष्कर्ष :

बिहार में पर्यटकों के आवासन सुविधा सहित विभिन्न सुविधाओं के विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण के पर्याप्त सुअवसर मौजुद है। साथ ही पर्यटक की संतुष्टि में दरभंगा प्रमंडल एक सुदंर स्थान है। पर्यटकों को बढ़ावा देकर मिथिला के आधारभूत सरंचना को सुदृढ़ किया जा सकता है। मिथिला में पर्यटन उद्योग के विकास की असीम संभावनाऐं मौजुद है। जिससे यहाँ आर्थिक संपन्नता आयेगी। तथा रोजगार को बढ़ावा मिलेगा। लोगों का पलायन रूक सकेगा। और प्राकृतिक आपदा जोखिम को कम करने के उपाय किये जा सकेंगें। विदेशी मुद्रा का अर्जन हो सकेगा तथा मिथिलांचल के लोगों के जीवन स्तर में आमूल परिवर्तन होगा। मिथिलांचल के विभिन्न भागों को सड़क, रेल, हवाई यात्रा के अनूकुल बनाया जा सकेगा।

दरभंगा, मधुबनी में आने वाले बाढ़ से आधारभूत संरचनाओं के विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है। सड़क, पूल–पुलियों को क्षति पहुँचती है। दरभंगा प्रमंडल को पर्यटनीय विकास के लिए आधारभूत संरचनाओं में सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ स्त्रोत :

1. ठाकुर, विजय (2010), भारत में ग्रामीण पर्यटन एक मासिक विकास, पृष्ठ–31
2. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2018–2019, पृष्ठ–200
3. पर्यटन विभाग, बिहार सरकार, वक्तव्य 2009–10, पृ०–21
4. प्रभात खबर, 15 जुलाई 2013, पृष्ठ सं० – 11 (भारत में पर्यटन)
5. दैनिक जागरण, 15 मार्च 2013, पृष्ठ – 4
6. ''भारत का विकासोन्मुख पर्यटन'' दैनिक जागरण 27 वीं जुलाई 2014, पृष्ठ सं० – 11
7. पर्यटन विभाग, बिहार सरकार वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16, पृष्ठ सं० 08
8. प्रभात खबर, 8 जनवरी 2013, पृष्ठ – 4